ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(9): 679-683
www.allresearchjournal.com
Received: 05-07-2017
Accepted: 17-08-2017

डॉ. सविता उपाध्याय
एसो. प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
कन्या महाविद्यालय, भूड,
बरेली, एम.जे.पी. रूहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सविता उपाध्याय
एसो. प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
कन्या महाविद्यालय, भूड,
बरेली, एम.जे.पी. रूहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली,
उत्तर प्रदेश, भारत

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में नैतिक मूल्य

डॉ. सविता उपाध्याय

सारांश
साहित्य सुखों और दुःखों को व्यक्त करने वाला शब्दों का व्यापार मात्र नहीं है। वह स्वयं में एक दर्शन है, स्थिर है, अविनाशी है। साहित्य की मूल आत्मा तो वह मानव विचार है, जिस पर सृष्टि ठहरी हुई है, और उसका उचित स्थान वह हृदय है जिसमें पीढ़ियाँ और युग अपने विश्वास को धरोहर की तरह छिपाकर रख सके, क्योंकि साहित्य की भूमि मानव जगत ही है। वहीं से वह अपना रस द्रव्य खींचकर पुष्ट होता है। माखन लाल जी का भी क्षेत्र जगत्-जीवन ही रहा है। इसी भूमि पर से कवि ने अपनी विषयवस्तु ग्रहण की है। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग, देशानुराग, स्वाभिमान, वीरत्व, आत्म सम्मान और बलिदान का अमर प्रतीक है – और ये ही भावनाएँ उनके काव्य में भी मुखरित हुई है।

कूट शब्द: साहित्य, काव्य, मानवीय मूल्य, सौन्दर्य, विकास, मानव, विचार, जीवन

प्रस्तावना
हिन्दी काव्य में माखन लाल चतुर्वेदी ने सम्पूर्ण मानवों को समानता के आधार पर परस्पर जोड़ा। माखन लाल चतुर्वेदी के अनुसार सारे मानव समान हैं। यथा —

"मनुष्य सारे सम हैं, न भेद है,
न दुर्बलों को हम 'दास सा लखें'
मनुष्यता उनको सिखावें
सद् धर्म, स्वातन्त्र्य, स्वदेश, सेवा" [1]

माखन लाल चतुर्वेदी ऐसे लोगों से खिन्न हैं जो धर्म-भाषा और देश के नाम पर आपस में कलह करते हैं –

"भाषा, देश, भाव, भूषण के दूषण हो सुख पाते
धर्म कर्म के जन्म पत्र में मृत्यु लकीर बनाते
हे भाई मदमाते भाई।" [2]

कवयित्री महाश्वेता चतुर्वेदी मानवीय मूल्यों के उन्नयन हेतु स्वयं से लड़ने का उद्बोधन करती है। यथा-

"यदि लड़ना है लड़े स्वयं से
मन के दानव को मारें
फूट-फसाद आपसी छोड़ें
माँ पर तन-मन-धन वारें" [3]

स्वयं से लड़कर मानव मानव बन सकता है सच्चा विवेक यही है कि बाहर की लड़ाई छोड़कर मानव स्वयं की दुष्प्रवृत्तियों से लड़े, तभी मानवीयता का विकास हो सकता है।

यही है मानवीय मूल्यों का वास्तविक सौन्दर्य जिससे सत प्रवृतियों का विकास सम्भावित है। जिसके लिए संकल्पशक्ति का कल्प वृक्ष उगाना अत्यन्तावश्यक है।

हमारे दूरदृष्टा ऋषि-मुनियों ने विचारों की महता पर बहुत अधिक बल दिया है। वृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है कि इच्छाप्रधान व्यक्ति जैसा संकल्प करता है, वैसा ही कर्म करता है। जैसा कर्म करता है, वैसा ही बन जाता है। वस्तुतः जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसा ही हमारा स्वभाव, हमारा आचार भी ढल जाता है। हमारा चेहरा, हमारा शरीर, हमारा स्वास्थ्य, हमारी सफलताएँ-असफलताएँ सभी कुछ हमारे विचारों की प्रतिच्छायाएँ हैं। अंग्रेजी में एक कहावत है- "तुम वह नहीं हो, जो तुम अपने विषय में सोचते हो कि तुम यह हो, अपितु तुम जैसे विचार करते हो, वास्तव में तुम वही हो।" यदि हम अपने विचारों को उन्नत बना सकें, विचारशक्ति पर नियंत्रण रख सकें, तो हमारे जीवन की अनगिनत समस्याओं, कष्टों और असफलताओं का स्वतः ही निदान हो जाए।

विचारों के नियंत्रण से वे बड़ी से बड़ी शक्तियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, जो सहज ही लोगों को चमत्कृत कर दे। विचारों का संयम और ध्यान की एकाग्रता यह दो इतने बड़े जादू हैं कि समस्त पृथ्वी का कायाकल्प करने की शक्ति स्वयं में रखते है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन सबकी सफलता का मूलमंत्र उन्नत विचारशक्ति और दृढ़ संकल्पबल ही है। उनके जीवन में अगणित कष्ट, कठिनाइयाँ आई, परंतु इन दो शक्तियों के बल पर उन्होंने उन सब पर विजय प्राप्त की।

ईश्वरीय प्रतिभा लेकर तो बिरले ही व्यक्ति आते हैं। संकल्प और साहस के अभाव में वह प्रतिमा भी धूमिल पड़ जाती है। कष्ट, कठिनाइयाँ किसके जीवन में नहीं आती? जो मन को निग्रहीत कर, कठिनाइयों में जीना सीख लेता है, संसार में वही महान और अनुकरणीय बनता है। यदि हम महापुरुषों के जीवन चरित्र का अध्ययन करें, तो पाएँगे कि उन्होंने कठिनाइयों को सहकर ही विजयश्री का वरण किया है। ईसा, सुकरात, गांधी और दयानन्द ने अपने सिद्धान्तों के प्रचार और प्रसार के लिए क्या नही सहा? आज मरकर भी वे यश-काया से अजर-अमर हैं, क्योंकि उन्होंने विचारशक्ति और संकल्पबल के द्वारा तूफानों, झंझावतों को हँसते-हँसते सहकर विश्व को नूतन प्रकाश दिखलाया। इसी प्रकार अन्य लोगों के उदाहरण भी हमारे सम्मुख है। कार्ल मार्क्स जब अपने विश्व-प्रसिद्ध ग्रंथ "कैपीटल" की रचना में पूरी तरह से डूबे हुए थे, तब उनके घर में खाना खाने को एक पैसा तक नहीं था। गोर्की सारे दिन साहित्य सृजन में लगे रहते और जब क्षुधा बहुत व्याकुल करती, तो कूड़े के ढेर से डबलरोटी के टुकड़े ढूँढते थे। ग्राहमवेल ने जब टेलीफोन का आविष्कार किया था, तब अंतिम राशि तक उसमें लगा दी थी और भूख की भी परवाह न कर वे अपने अन्वेषण में जुटे रहे थे। वज्र मूर्ख कालिदास संकल्पशक्ति के बल से ही विश्ववंद्य महाकवि बने थे।

वस्तुतः हम में से कोई भी कार्लमार्कस, गोर्की, कालिदास आदि से कम नहीं है। जो हाथ-पैर और प्रतिभाएँ क्षमताएँ भगवान ने उन्हें दी थी, वही हमें भी दी है। अन्तर इतना ही है कि उन्होंने अपने दृढ़ निश्चय को, आगे बढ़ने के भाव को निरन्तर बनाए रखा, कभी निराशा और कायरता को प्रश्रय नहीं दिया, परन्तु हम छोटी-छोटी बाधाओं मैं भी हार मानकर, थककर और निराशा से चूर होकर बैठ जाते हैं। अपने विचारों को ऊँचा उठाइए। अपनी संकल्पशक्ति को जगाइए। कायरता और निराशा कुंठाओं के विचारों को पास न फटकने दीजिए।

कौन-सा ऐसा कार्य है, जो आपके लिए असम्भव है? अपने पौरुष और कर्मठता पर विश्वास रखिए तथा पूरी शक्ति से लक्ष्य की ओर बढ़ जाइए। अंधकार से प्रकाश की ओर जाइए। तभी आप मनुष्य कहलाने के अधिकारी है। इसी में मनुष्य की गरिमा भी है।

इसी गरिमा के संवर्धन के लिए साहित्य का सृजन होता है जिसके सद्विचार हमारा पथ प्रदर्शन कर हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं तब हमारे कर्ण कुहरों में ऋचाएँ गूँजती है –

"असतो मा सद् गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मामृतं गमय"
- वृहदारण्यक उपनिषद् (सोमयज्ञ की स्तुति)

सद्विचारों के अनुपालन से जीवन में सौन्दर्य का अवतरण होता है। साहित्य में सौन्दर्य भी निम्नलिखित दो रूपों में विभक्त होकर अभिव्यक्त होता है- ***1.*** बाह्य सौन्दर्य या कलागत सौन्दर्य और ***2.*** आन्तरिक सौन्दर्य या भावगत सौन्दर्य। इनमें से भावगत सौन्दर्य को विशेष महत्व प्रदान किया जाता है और सुन्दर भावों की अभिव्यक्ति में सफल होने वाले कलाकार ही स्थायी महत्व के अधिकारी होते हैं। वास्तव में सुन्दर भाव वे हैं, जो मानव को क्षुद्रता से उठाकर औदात्य की ओर ले जायँ, अतः ऐसे चित्रण में करुणा, प्रेम, ग्लानि और लोक से सम्बन्धित भावनाओं का चित्रण होता है तथा इनमें पाठक के मर्म को स्पर्श कर लेने की क्षमता भी होती। भावगत सौन्दर्य का अभिव्यंजक यह छन्द दृष्टव्य है –

सबका निचोड़ लेकर तुम सुख से सूखे जीवन में।
बरसो प्रभात हिमकन सा आँसू इस विश्व-सदन में।।[4]

कलागत या शिल्पगत सौन्दर्य भी साहित्य में आवश्यक माना जाता है और इस शिल्प सौन्दर्य के लिए भाषागत प्रवाह अभीष्ट अर्थ की व्यंजना में सूक्ष्म सशक्त शब्दों का चयन शैली की व्यक्तिगत छाप होनी चाहिए। उक्त विशेषताओं से सम्पन्न साहित्यकार का ध्यान बाह्य सौन्दर्य की ओर गया है और हिन्दी कविता में सौन्दर्य का मनोहर एवं सूक्ष्म अंकन दीख पड़ता है। उदाहरणार्थ –

शांत स्निग्ध, ज्योत्स्ना उज्ज्वल।
अपलक अनंत, नीरव भूतल।।
सैकत शय्या पर दुग्ध धवल, तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल
लेटी है श्रांत, क्लांत, निश्चल
तापस बाला गंगा निर्मल, शशि मुख से दीपित मृदु करतल
लहरें उर पर कोमल कुंतल[5]

सौन्दर्य की परिभाषाओं के सम्बन्ध में भले ही विभिन्नता हो, पर साहित्य में सौन्दर्य के स्थान के प्रश्न पर प्रायः मतैक्य ही मिलता है और 'सौन्दर्य साहित्य का शाश्वत गुण है। यदि साहित्य में सुन्दरता का अभाव है तो वह साहित्य अलंकृत नहीं होगा। "यद्यपि कुछ विचारकों का कहना है कि साहित्य में सौन्दर्य का ही एकमात्र चित्रण होने से साहित्य अनिष्टकर बन जाता है, क्योंकि यदि कलाकार कल्पनालोक के चित्रों को अंकित करने में लग गया, तो साहित्य में जीवन और उसकी सामग्री का उपयोग उपेक्षित हो जायेगा ।, पर वास्तविकता तो यह है कि साहित्य का हर वाक्य सौन्दर्य से आपूरित है काव्य का सौन्दर्य क्षण भंगुर नहीं जिसे अंग्रेज कवि कीट्स ने ट्रुथ कहा है –

Beauty is Truth, Truth Beauty
That's All You Know
And All Yet Need to Know [6]

माखन लाल चतुर्वेदी (1889-1968) ने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सर्जना कर मानवीय मूल्यों के उन्नयन का पथ प्रशस्त किया। कला और जीवन को अमरत्व प्रदान करने वाले यशस्वी संकल्प के धनी माखन लाल चतुर्वेदी ने साहित्य में स्वातन्त्र्य चेतना का मंत्र फूकने का सार्थक प्रयास किया। उनके अनुसार सहिष्णुता और धैर्य समुन्नति के सोपान हैं, जिसे

उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है –

"मत व्यर्थ पुकारे शूल-शूल, कह फूल-फूल, सह फूल-फूल,
हरि को हीतल में बंद किये, केहरि से कह नख हूल-हूल।
कागों का सुन कर्तव्य-राग, कोकिल-ककलि को भूल-भूल।
सुरपुर ठुकरा, आराध्य कहे, तो चल रौरव के कूल-कूल।
भूखंड बिछा, आकाश ओढ़, नयनोदक ले, मोदक प्रहार,
ब्रह्माण्ड हथेली पर उछाल, अपने जीवन-धन को निहार।" [7]

(बिलासपुर जेल: 1921)

अपने जीवन धन को पहचान कर मानव क्या नहीं कर सकता? करुणा से आपूरित कवि हृदय ने निर्धन कृषकों की आत्माभिव्यक्ति को प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है जिसमें संवेदना और न्याय भाव जाग्रत करने की सामर्थ्य है –

खा रहे हो अन्न? मरणासन्न, –
मेरी हड्डियों का स्वाद कैसा लग रहा है?
सुलगाना चाहा? नहीं मेरे हृदय का क्रोध आज सुलग रहा है।
चूसते हो फल? सम्भालो –
रक्त मेरा भर रहा है सब फलों में,
और वह भी झर रहा है, जो झरा करता अभागे दृगजलों में।
कंद मत खोदो, हमारे-
हैं गढ़े बच्चे उन्हीं के पास भगवन,
वायु का स्वर है? सिसकियाँ है, हमारी और क्रन्दन।
तुम बड़े हो, रहो,
छोटापन हमारा पर न छीनो!
रोटियाँ छोड़ो-भले ही ले चुको दुर्भाग्य! तुम, ये लोक तीनो![8]

(1940. युगचरण)

"साँझ और ढोलक की थापें" नामक रचना में ढोलक पर थापें देने वाले ऐसे मोची का मनोवैज्ञानिक चित्रण है जो कामों से निपटकर साझें को ढोलक पर थापें देकर अपना मनोरंजन करता है। ऐसे गीतों में मानवता को विकसित करने की सामर्थ्य है। यथा –

मेरे मालिक, मेरे अलगोजे से क्यों नाराज़ हो गये?
चिड़ियों से चहका करते थे, अब चिड़ियों के बाज हो गये।
जब गुंडा मोची, ढोलक पर अपनी थापें दे लेता है
जब सोहन दादा का मस्तक उन थापों पर डुल-जुल उठता
तब मेरे औंठों मैं बेकाबू-सी उठती एक हरारत
अलगोजे से बजा-बजा मैं थापों का करता हूँ स्वागत।
उस दिन सूरज कुम्हला जाता, चंदा उतर भूमि पर आता
सन्नाटा एकान्त देखकर अलगोजे से तान मिलाता।
अलगोजा चढ़ गया ओंठ पर, उतर-उतर आँसू आ जाते
पगिया के, दो लिपटन उनके वे-घरबार पोंछते जाते।
हँस उठता हूँ जबकि गरीबी के झाड़ों में फल आते हैं
रस्ता चलने वाले रुकते वाह-वाह की झर लाते हैं।
दिन भर काम करेंगे मालिक, संझा हुई कि थापें देंगे
साँसें दे-देकर बज़ार से, बाज़ी पर अलगोजा लेंगे।[9]

माखन लाल चतुर्वेदी केवल कवि ही नहीं एक प्रखर तथा सजग पत्रकार भी थे। कवि के रूप में उनका काव्य मानवीय मूल्यों के उन्नयन के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनकी हर रचना हृदय को स्पन्दित करने की सामर्थ्य रखती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. माखन लाल चतुर्वेदी, भाग-6, सम्पा० श्रीकान्त जोशी, प्रकाशन सं० 1983, पृ०36.
2. वही.
3. गुरु दक्षिणा (खंडकाव्य) प्र०सं० 2006, डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी.
4. कामायनी *:* जयशंकर प्रसाद.
5. सुमित्रा नन्दन पन्त *:* काव्यांजलि, पृ० 245.
6. Endymion: John Keats
7. हिमतरंगिणी *:* माखन लाल चतुर्वेदी,
8. युग चरण *:* माखन लाल चतुर्वेदी
9. माखन लाल चतुर्वेदी *:* सम्पा०-श्री कान्त जोशी, पृ० 153 प्रथम संस्करण 1989, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली-110001